ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-5* August-2020
Anthology : The Research

पौराणिक कथाओं के युगीन व्याख्याकार–डॉ.श्री रामकुमार वर्मा एक अनुसंधानात्मक अध्ययन

Eugenic Interpreters of Mythology - Dr. Shri Ramkumar Varma An research study

Paper Submission: 12/08/2020, Date of Acceptance: 23/08/2020, Date of Publication: 24/08/2020

धीरेन कुमार कांतिलाल मकवाणा
सह प्राध्यापक,
जर्नालिज्म एडं परफोमिंग आर्टस विभाग,
अर्जुनलाल हिराणी कॉलेज ऑफ, राजकोट, गुजरात, भारत

सारांश

हिन्दी साहित्य जगत के व्यापक क्षेत्र में अपनी साहित्यराशि का अपनी विपुलता से प्रदान करने वाले कवि वर्माजी भारतीय संस्कृति के आख्याता बने रहे हैं। संस्कृति की गुण–गाथा गाना उनके काव्य–सात्यि एवं नाट्य साहित्य की विशेषता रही है। वैसे भी भारतीय संस्कृति आदर्श और सदाचार की प्रेरक रही है प्रकारांतर से वह जीवन मूल्यों और जीवन–दृष्टि से जुड़ी रही है अंत–विभिन्न कलात्मक उपादानों से साथ–साथ नैतिकता और परहित–साधना भी हमारे सांस्कृति परिवेश को जीवन–मूल्यों से गहराई तक जोड़ने वाला रहा है। भाषा–भूषा, रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार, उपासना एवं चिन्तन पद्धतियों का हमारे यहाँ वैविध्य है और यही वैविध्य हमारी संस्कृति विरासत और वैचारिक स्तर को महिमामय और गरिमा सम्पन्न करता है। हम–सा वैविध्य–विपुल अन्यत्र विरल है। इतना वैविध्य होते हुए भी एक अंतः सलिला है जो सबको एक ही गंतव्य की ओर प्रेरित करती है सबको एकता के मजबूत पाश में बाँधती है और हमें निरंतर एक होने का अहसास कराती है। पारस्परिक और सहिष्णुता के बोध ने हमारे सांस्कृतिक बोध को 'वसुधैव कुटुंबकम्' की व्यापकता दी है। इस कुटुंब का मूल आधार रहा है श्रेष्ठतम् मानवीय मूल्यों की विरासत, जिनका संचरण विविध सांस्कृतिक उपादानों के माध्यम ये होता रहा है। साहित्य के इन्ही मूल्यों के आधार स्तंभ बना कर वर्माजी ने पौराणिक कथाओं के चरित्रों को अपने सृजन की श्रृँखला में पिरोया है।

Poet Varmaji, who provided his literature with its abundance in the wider field of Hindi literature, has remained a legend of Indian culture. Singing the virtues of culture has been a specialty of his poetry and literature. As it is, Indian culture has been inspired by ideals and virtue; in the end, it has been associated with life values and life-vision. Finally, with various artistic products, along with morality and altruism, our cultural environment is deeply connected to life values. Has been Language, language, living, food, ethics, worship and thinking systems have diversity in us and this diversity makes our culture heritage and ideological level glorious and dignified. We are variegated - very sparse elsewhere. In spite of this diversity, there is an inner sense that inspires everyone towards the same destination, binds everyone in a strong loop of unity and makes us feel constantly one. The sense of mutual and tolerance has given our cultural sense the prevalence of 'Vasudhaiva Kutumbakam'. The basic basis of this family has been the legacy of the best human values, which have been transmitted through various cultural products. By making these pillars the basis of these values of literature, Verma has threaded the characters of mythology into the chain of his creation.

मुख्य शब्द : साहित्य संस्कृति काव्य कथा।
Literature Culture Poetic Story.

प्रस्तावना

छायावादी सीमा में रहकर भी उनकी रचना में विविधता देखने को मिलती है। उनका साहित्य भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्यों को केन्द्रबिन्दु में रखता है। जहाँ उन्होने देश की सास्कृतिक गरिमा को गौरवान्वित किया है वहाँ उनमें प्राचीनता का निर्वाह हुआ है। उनकी काव्य शक्ति पौराणिक पात्रों में दृष्टिगत होती है। जब छायावादी काव्य–धारा पर रहस्यवादी चेतना का असर था तब ऐसे में भी वर्माजी की दृष्टि पौराणिक कथानक पर गई। ''एक ओर जहाँ उल्लिखित है कि उत्तर छायावाद में रामकुमार छायावाद की रहस्योन्मुख

मनःस्थिति से जुड़े रहते हैं जिसमें पौराणिक कथाओं की युगीन व्याख्या देने का द्विवेदी युग जैसा प्रयत्न हुआ है।''[2]

छायावादी निष्ठा में चलनेवाले डॉ. राजकुमार वर्माजी का काव्य–साहित्य प्राचीन ग्रंथों के उत्कृष्ट पात्रों की गाथा गाता है। 'रामचरित मानस' तथा 'महाभारत' जैसी महान ग्रंथावली में वर्णित प्रंसगों को साहजिकता से अपने काव्य –साहित्य में स्थान दिना है। 'एकलव्य', 'ओ अहल्या', 'उत्तरायण' आदि इसके उदाहरण हैं। पौराणिक कथाओं के ओजस्वी चरित्रों को विस्तार से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करके उनकी व्यक्तित्व–विशेषताओं को उजागर किया है। 'वीर हमीर', 'चित्तौड़ की चिता' आादि में इस बात का प्रमाण मिलता है। वैदिक साहित्य के उत्तम चरित्र श्री राम हैं। वाल्मीकि ने इस महापुरुष के चरित्र को रामायण के द्वारा जनगाथा बनाया। रामायण के प्रसंग पर आधारित 'बालि–वध' की कथा 'विपट ओट' से बालि–वध के विकल्प को चित्रित करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य पौराणिक कथाओं के युगीन व्याख्याकार–डॉ.श्री रामकुमार वर्मा के विचारो का अध्ययन करना है।

अछूते एवं लांक्षित पात्रों का चयन

पौराणिक कथाओं में अछूते एवं लांक्षित पात्रों के प्रति सहदयता एवं सहानुभूति प्रस्तुत करना वर्माजी के कवि रुप का तो स्वभाव रहा ही है साथ ही साथ उनके एकांकी एवं नाटकों के पात्र–चरित्रों के साथ भी वर्माजी का साहित्यकार उनके बहुत ही निकट रहा है। अपने रचना संसार की सृष्टि में प्रचीनता के साथ नावीन्य का बोध कराने वाले वर्माजी के पौराणिक पात्र अपनी चारित्रिक विशेषताओं के स्थान पाकर आज ही जन मन के मानस में अपनी भक्ति, पवित्रता एवं उत्तम आदर्शो की छाप छोड़ गए हैं। जैसे कि एकलव्य, अहल्या, सीता, तुलसी, रत्ना आदि। इसी संदर्भ में स्वामि चिन्मयानंद सरस्वती के यह विचार उचित प्रतीत होते हैं कि राम ने अहल्या का उद्धार तो कर दिया परंतु उसके चरित्र पर लगाया गया यह दाग, ऐतिहासिक अहल्या का दर्द बन गया। इतिहास के इस झूठ को पहली बार अनावृत किया गया है डॉ. रामकुमार वर्माजी ने जो न केवल हिन्दी–साहित्य के अपितु हिन्दी संस्कृति के वर्तमान ऋषि ही कर सकता था। इसके लिए वे श्रेष्ठतम सम्मान के अधिकारी हैं।''

वर्माजी ने इन पात्रों को आदर्शो के साथ चित्रित किया है। उनके इर्द–गिर्द जिन कथाओं और प्रसंगों का आलेखन हुआ है। उनमें भी सामाजिक मर्यादाएँ, नैतिक मूल्य एवं पौराणिक का निर्वाह हुआ है। उनका साहित्य प्राचीनता के प्रति आदरभाव प्रस्तुत करता है। मानवीय मूल्यों को प्राचीन कथाओं की मुख्य चेतना बना कर आधुनिकता की अर्थहीनता को ललकारा है। वैसे तो ''मानवतावादी दर्शन की भूमिका में यांत्रिकता से विद्रोह, युद्ध से विद्रोह नृशंसता से विद्रोह, अराजकता से विद्रोह, आरोपित भय से विद्रोह तथा मनुष्य के नैसर्गिक अनुशासन की स्थापना आदि ऐसे तत्व है जिन्होने आधुनिक साहित्य रचना को प्रभावित किया है। किंतु छायावादी कविता का मूल स्वर जो ऐसी अमोघ शक्ति है जिसमें ''दासता की श्रृँखलाओं में जकड़ी हुई जनता की यातनाओं के प्रति ज्वलंत सहानुभूति, उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न, सामाजिक व्यवस्था के पुर्ननिर्माण की आशाएँ, गहरा मानवतावाद एवं मर्मस्पर्शी गीतात्मकता, मनुष्य तथा उसके सुख में विश्वास, वास्तवकता के विषय में तीव्र अनुभूति। की अभिव्यक्ति प्रस्तुत है। इन प्रभावों से परे रह कर भी वर्माजी ने जिन साहित्यक मूल्यों को केंद्र में रखकर रचनाएँ की है वे तत्कालीन समाज में तो प्रशस्ति की पात्र हुई, आज भी उन कृतियों का साहित्यिक मूल्यों केन्द्र में रखका रचनाएं की है वे तत्कालिन समाज में तो प्रशस्ति की पात्र हुई, आज भी उन कृतियों का साहित्यिक मूल्य स्तुल्य है। ऐसी कृतियों में 'एकलव्य' कृति को विशेष रुप से प्रकाश में लाया जाता है। '' एकलव्य महाकाव्य की रचना शाश्वत मूल्यों के आधार पर की गई है कितुं सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के प्रभाव स तात्कालिक समानान्तरण देखा जा सकता है।

'एकलव्य' के रचनाकाल की परिस्थितियाँ कवि के मानस को विशेष प्रभावित कर गई। उन्होने पौराणिक आदर्शो की अवलेहना नहीं की बल्कि उनको अपनाकर, अपने साहित्य में विशेष स्थान दिया है। 'राजा का कर्तव्य, धर्म तथा उसकी महत्ता आदि मूल्यों की चर्चा महाभारत में शांति पर्व में की गई है। ''इस शाश्वत सत्य के विपरित महाभारत काल में जन साधारण की ओर से अधर्म की प्रवृत्तियाँ परिचालित हुई हैं। मानव कल्याण की अपेक्षा मानव की विविध श्रेणियों में भेद और तज्जनित ईर्ष्या, आर्य अनार्य में भेद, आर्यों द्वारा अनार्यों का दमन, आदि अनेक दुष्प्रवृत्तियाँ निर्ममता से परिचालित हुई। इन्ही परिस्थितियों का समुचित चित्र वर्माजी ने 'एकलव्य' में अंकित किया है :–

''आपने कहा था उस दिन इस अर्थ में?
जाओ, हे निषाद पुत्र! तुम हो अस्वीकृत,
'तुम हो अस्वीकृत' कहा था यह किसने?
आप ने या भीष्म ही की राजनिति ने?
और श्याम वर्ण, वन्य–वेश धारी हैं,
अत्याचार सहते हैं, इसलिए शूद्र हैं?
अपनी सु–भूमि पर शांतिपूर्ण ढंग से –
हम रहते थे–किया आक्रमण किसने,
आक्रमणकारी कौन? आर्य, क्या वे आर्य हैं,
जो कि शांति–प्रेमी जनों के लिए कृतांत है,
अपने को 'आर्य' कहा और हमें हिंसा से–
'शूद्र' कहा, पैरों तले मदिर्त किया सदा।
सेवक बनाया हमें किस अधिकार से?
इसलिए कि शक्ति में उन्हें यश प्राप्त है?
किंतु शक्ति मानव की देव ! दानवी नहीं
मानव की शक्ति तो महान तब होती है–
जब वह दानव को मानव बना सके,
और सब मानवों में साम्य की हो स्थापना।

प्राचीन समाज का दृष्टिकोण

प्राचीन समय का समाज जातिवाद से पीड़ित था। उस समाज की व्यवस्था में जातिवाद का महत्वपूर्ण योगदान था। आर्यों का भारत में आगमन ऋगवेदकालीन

था। तत्कालीन समाज में दो जातियाँ अस्तित्व में थीं ब्राहमण और क्षत्रिय। उन्ही के द्वारा 'बिश्' और वेश्यों का अस्तित्व स्थापित किया गया है। 'बिश् को ऋगवेद में तो तीसरी जाति के रुप में उल्लेखित किया गया है। जबकि चौथी जाति के रुप में 'शूद्र' को रामायण एवं महाभारत के काल में वर्गीकृत किया गया है। शूद्र पुरुष तथा क्षत्रिय स्त्री की संतान 'निषाद' कहलाती है और यही 'एकलव्य' निषाद के रुप में उन मानवीय मूल्यों, चेतना एवं मर्यादाओं को लेकर आया है। जिनका पौराणिक कथाओं में अधिक महत्व है। संघर्षपूर्ण जीवन को साधना मानकर स्वयं को संघर्ष के सामने शिथिल न बनाकर जूझनेवाला एकलव्य आचरण की मर्यादा को प्रतिपादित करता है।

''मेरे गुरु विप्र और शूद्र मैं निषाद हूँ,
किन्तु गुरुवाणी ही अमोघ अभिषेक है।
ऊपर और नीचे क्या ओष्ठ भी नहीं है दो?
किन्तु जो निकलती है वाणी, वह एक है।

निष्कर्ष

कवि वर्माजी का काव्य–साहित्य पौराणिक से अत्यधिक प्रभावित रहा है। इस बात का प्रमाण अहल्या–उद्धार एकलव्य एवं उत्तरायण में प्रस्फुटित उनकी वाणी ही है। जहाँ तक पौराणिकता के प्रति उनका लगाव प्रस्तुत है वहाँ उनका नावीन्यपूर्ण दृष्टिकोण पाठकों को वर्माजी की अमोघ दृष्टि के प्रति आकर्षित करता है। भारतीयता के प्रति आकर्षित करता है। भारतीयता के प्रति उनका आदरभाव एवं अज्ञात तत्व के रुप में सर्वशक्तिमान सत्ता के प्रति उनका आत्माख्यान उल्लेखनीय है

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 *मधुमती (पत्रिका), सं. प्रकाश आतुर*
2 *एक दीपक किरण कण हूँ, सं. डॉ चन्द्रिका प्रसाद षर्मा*
3 *एक दीपक किरण कण हूँ, सं. डॉ चन्द्रिका प्रसाद शर्मा*
4 *सुमित्रा नंदन पंत तथा आधुनिक हिंदी कविता में परंपरा और नवीनता*
5 *संस्मरणों के सुमन, डॉ रामकुमार वर्मा*
6 *संस्मरणों के सुमन, डॉ रामकुमार वर्मा*
7 *एकलव्य, डॉ रामकुमार वर्मा*
8 *एकलव्य, डॉ रामकुमार वर्मा*